


# ॥ श्री खाटू श्याम जी बर्बरीक कथा ॥

## वीर बर्बरीक से बाबा श्याम तक

जन्म • साधना • प्रतिज्ञा • शीशदान • वरदान

# Full Disclaimer

*This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.*

*This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.*

*Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.*

*Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.*

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

# ॥ श्री खाटू श्याम जी बर्बरीक कथा ॥

प्रचलित भक्त-कथाओं का सरल हिंदी पुनर्कथन।
वंश, वरदान और घटनाक्रम में अलग-अलग परंपराओं के पाठांतर मिलते हैं।

## जन्म और वीर वंश

खाटू श्याम की प्रचलित भक्त-कथा में बर्बरीक महाबली भीम और हिडिम्बा के पौत्र तथा घटोत्कच के पुत्र हैं। उनकी माता का नाम कई परंपराओं में मोर्वी या मौर्वी और कुछ में अहिलावती बताया जाता है। बर्बरीक में वीरता और करुणा दोनों का वर्णन मिलता है। भक्त उन्हें मोर्वीनन्दन कहकर भी स्मरण करते हैं।

## शस्त्रविद्या और साधना

बाल्यकाल से ही बर्बरीक को धनुर्विद्या में विशेष रुचि थी। उन्होंने शस्त्रों के अभ्यास के साथ साधना की। लोककथाओं में तप से उन्हें दिव्य शक्ति और तीन अमोघ बाण प्राप्त होने का वर्णन है। कुछ परंपराएँ इस वरदान को देवी की कृपा से और कुछ शिवजी की कृपा से जोड़ती हैं। तीन बाणों के कारण वे तीन बाणधारी कहलाए।

॥ जय श्री श्याम ॥

# ॥ श्री खाटू श्याम जी बर्बरीक कथा ॥

प्रचलित भक्त-कथाओं का सरल हिंदी पुनर्कथन।
वंश, वरदान और घटनाक्रम में अलग-अलग परंपराओं के पाठांतर मिलते हैं।

## माता को दिया वचन

जब पांडवों और कौरवों का युद्ध निश्चित हुआ, तब बर्बरीक ने भी संग्राम में जाने की अनुमति माँगी। माता ने उन्हें निर्बल की सहायता का स्मरण कराया। बर्बरीक ने प्रतिज्ञा की कि युद्ध में जिस पक्ष की हार हो रही होगी, वे उसी का साथ देंगे। उनका यह संकल्प आगे चलकर हारे का सहारा नाम से जुड़ा।

## कुरुक्षेत्र की यात्रा और परीक्षा

बर्बरीक धनुष और तीन बाण लेकर नीले घोड़े पर युद्धभूमि की ओर चले। श्रीकृष्ण ब्राह्मण का रूप लेकर उनके सामने आए। उन्होंने पीपल के पत्तों के माध्यम से उनके बाण की परीक्षा ली। बाण उस पत्ते तक भी पहुँच गया जिसे श्रीकृष्ण ने अपने पैर के नीचे छिपाया था। बर्बरीक की असाधारण सामर्थ्य स्पष्ट हो गई।

॥ जय श्री श्याम ॥

# ॥ श्री खाटू श्याम जी बर्बरीक कथा ॥

प्रचलित भक्त-कथाओं का सरल हिंदी पुनर्कथन।
वंश, वरदान और घटनाक्रम में अलग-अलग परंपराओं के पाठांतर मिलते हैं।

## शक्ति और प्रतिज्ञा का प्रश्न

श्रीकृष्ण ने बर्बरीक की प्रतिज्ञा का परिणाम विचार किया। वे जिस सेना की सहायता करते, वह प्रबल हो जाती और दूसरी निर्बल। अपने वचन के कारण बर्बरीक फिर दूसरे पक्ष में चले जाते। कथा में यह दुविधा शक्ति के साथ विवेक और दूरदृष्टि की आवश्यकता का संकेत बनती है।

## शीशदान और युद्ध के साक्षी

ब्राह्मण-रूपी श्रीकृष्ण ने बर्बरीक से उनका शीश दान में माँगा। बर्बरीक ने दिव्य स्वरूप के दर्शन की प्रार्थना की। श्रीकृष्ण के दर्शन के बाद उन्होंने शीश समर्पित किया और युद्ध देखने की इच्छा रखी। कथा के अनुसार श्रीकृष्ण ने उनका शीश ऊँचे स्थान पर स्थापित कराया। वे युद्ध में लड़े बिना उसके साक्षी बने और शीश के दानी कहलाए।

॥ जय श्री श्याम ॥

# ॥ श्री खाटू श्याम जी बर्बरीक कथा ॥

प्रचलित भक्त-कथाओं का सरल हिंदी पुनर्कथन।
वंश, वरदान और घटनाक्रम में अलग-अलग परंपराओं के पाठांतर मिलते हैं।

## श्याम नाम का वरदान

युद्ध के बाद विजय के श्रेय पर चर्चा हुई तो बर्बरीक से पूछा गया। उन्होंने युद्ध के पीछे श्रीकृष्ण की शक्ति और मार्गदर्शन को प्रमुख बताया। उनकी भक्ति और त्याग से प्रसन्न श्रीकृष्ण ने उन्हें कलियुग में अपने श्याम नाम से पूजे जाने का वरदान दिया। इसी भक्त-परंपरा में बर्बरीक और श्याम बाबा का संबंध समझाया जाता है।

## खाटू धाम और कथा का भाव

बाद की जनश्रुति में खाटू में एक गाय के दूध बहाने वाले स्थान से दिव्य शीश मिलने का प्रसंग है। राजा रूपसिंह चौहान को स्वप्नादेश मिलने और मंदिर में शीश की प्रतिष्ठा का वर्णन भी आता है। इस प्रकार खाटू धाम बाबा श्याम की भक्ति का प्रसिद्ध केंद्र बना।

बर्बरीक की कथा वीरता के साथ विनय, सामर्थ्य के साथ विवेक और भक्ति के साथ सेवा का स्मरण कराती है। भक्त उन्हें तीन बाणधारी, मोर्वीनन्दन, शीश के दानी और हारे का सहारा कहकर प्रणाम करते हैं।

॥ श्री खाटू श्याम जी बर्बरीक कथा सम्पूर्ण ॥